

سُورَةُ الْقَمَرِ

Surah 54 — Al-Qamar (The Moon) · Meccan · 55 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ

क़यामत करीब आ गयी और चाँद दो टुकड़े हो गया

2

وَإِنْ يَرَوْا ءَايَةً يُعْرِضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ

और अगर ये कुफ़्कार कोई मौजिज़ा देखते हैं, तो मुँह फेर लेते हैं, और कहते हैं कि ये तो बड़ा ज़बरदस्त जादू है

3

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ

और उन लोगों ने झुठलाया और अपनी नफ़सियानी स्वाहिशों की पैरवी की, और हर काम का वक्त मुक़रर है

4

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأُنْذَارِ بَآءٌ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ

और उनके पास तो वह हालात पहुँच चुके हैं जिनमें काफी तम्बीह थीं

5

حِكْمَةٌ بَلِغَةٌ ۖ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ

और इन्तेहा दर्जे की दानाई मगर (उनको तो) डराना कुछ फ़ायदा नहीं देता

6

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۖ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نَّكُرٍ

तो (ऐ रसूल) तुम भी उनसे किनाराकश रहो, जिस दिन एक बुलाने वाला (इसराफ़ील) एक अजनबी और नागवार चीज़ की तरफ़ बुलाएगा

7

خُشْعًا أَبْصَرُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ

तो (निदामत से) आँखें नीचे किए हुए कब्रों से निकल पड़ेंगे गोया वह फैली हुई टिड्डियाँ हैं

8

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۚ يَقُولُ الْكٰفِرُونَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۚ

(और) बुलाने वाले की तरफ गर्दनें बढ़ाए दौड़ते जाते होंगे, कुफ़रार कहेंगे ये तो बड़ा सख्त दिन है

9

ۚ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۚ فَكَذَّبُوهُ ۚ عَبْدًا وَقَالُوا ۚ مَجْنُونٌ ۚ وَازْدُجِرَ

इनसे पहले नूह की क़ौम ने भी झुठलाया था, तो उन्होंने हमारे (खास) बन्दे (नूह) को झुठलाया, और कहने लगे ये तो दीवाना है

10

فَدَعَا رَبَّهُ ۚ اِنِّىٓ مَغْلُوْبٌ ۚ فَانْتَصِرَ

और उनको झिड़कियाँ भी दी गयीं, तो उन्होंने अपने परवरदिगार से दुआ की कि (बारे इलाहा मैं) इनके मुक़ाबले में कमज़ोर हूँ

11

فَفَتَحْنَا اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ ۚ مِنْهُمْ ۚ

तो अब तू ही (इनसे) बदला ले तो हमने मूसलाधार पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए

12

وَفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا ۚ فَالتَقَى الْمَآءُ عَلَىٰ اَمْرِ ۚ قَدْ قُدِرَ

और ज़मीन से चश्में जारी कर दिए, तो एक काम के लिए जो मुक़र्रर हो चुका था (दोनों) पानी मिलकर एक हो गया

13

وَحَمَلْنٰهُ عَلَىٰ ذَاتِ الْوَحِ ۚ وَدُسِّرَ ۚ

और हमने एक कशती पर जो तख्तों और कीलों से तैयार की गयी थी सवार किया

14

تَجْرِىٓ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءٌ ۚ لِّمَن كَانَ كُفِرَ

और वह हमारी निगरानी में चल रही थी (ये) उस शख्स (नूह) का बदला लेने के लिए जिसको लोग न मानते थे

15

وَلَقَدْ تَرَكْنٰهَا ءَايَةً ۚ فَهَلْ مِنْ مُّدْكِرٍ ۚ

और हमने उसको एक इबरत बना कर छोड़ा तो कोई है जो इबरत हासिल करे

16

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ

तो (उनको) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था

17

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍۭ

और हमने तो कुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया है तो कोई है जो नसीहत हासिल करे

18

كَذَّبَتْ عَادٌۭ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ

आद (की क्रौम ने) (अपने पैग़म्बर) को झुठलाया तो (उनका) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था,

19

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًاۖ صَرْصَرًاۖ فِي يَوْمٍۭ نَحْسٍۭ مُّسْتَمِرٍّۭ

हमने उन पर बहुत सख्त मनहूस दिन में बड़े ज़न्नाटे की आँधी चलायी

20

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أُعْجَازُ نَخْلٍۭ مُّنْقَعِرٍۭ

जो लोगों को (अपनी जगह से) इस तरह उखाड़ फेकती थी गोया वह उखड़े हुए खजूर के तने हैं

21

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ

तो (उनको) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था

22

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍۭ

और हमने तो कुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया, तो कोई है जो नसीहत हासिल करे

23

كَذَّبَتْ ثَمُودُۭ بِالنُّذْرِ

(क्रौम) समूद ने डराने वाले (पैग़म्बरों) को झुठलाया

24

فَقَالُوا ۖ أَبَشَرٌ مِّنَّا وَحِدٌ ۖ إِنَّا نَنبَغُهُ ۖ إِنَّا إِذًا ۖ لَفِي ضَلَالٍ ۖ وَسُعُرٌ

तो कहने लगे कि भला एक आदमी की जो हम ही में से हो उसकी पैरवी करें ऐसा करें तो गुमराही और दीवानगी में पड़ गए

25

أَلُفِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن ۖ بَيْنَنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرُّ ۖ

क्या हम सबमें बस उसी पर वही नाज़िल हुई है (नहीं) बल्कि ये तो बड़ा झूठा तअल्ली करने वाला है

26

سَيَعْلَمُونَ غَدًا ۖ مِّنَ الْكَذَّابِ الْأَشِرِّ

उनको अनकरीब कल ही मालूम हो जाएगा कि कौन बड़ा झूठा तकबुर करने वाला है

27

إِنَّا مُرْسِلُوا ۖ النَّاقَةِ فِتْنَةً ۖ لَهُمْ فَاَرْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ

(ऐ सालेह) हम उनकी आजमाइश के लिए ऊँटनी भेजने वाले हैं तो तुम उनको देखते रहो और (थोड़ा) सब्र करो

28

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ ۖ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ شِرْبٍ ۖ مُحْتَضَرٌ ۖ

और उनको खबर कर दो कि उनमें पानी की बारी मुकर्रर कर दी गयी है हर (बारी वाले को अपनी) बारी पर हाज़िर होना चाहिए

29

فَنَادَوْا ۖ صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَىٰ فَعَقَرَ

तो उन लोगों ने अपने रफीक (क़ेदार) को बुलाया तो उसने पकड़ कर (ऊँटनी की) कूँचे काट डालीं

30

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ

तो (देखो) मेरा अज़ाब और डराना कैसा था

31

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً ۖ وَحِدَةً ۖ فَكَانُوا ۖ كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ

हमने उन पर एक सख्त चिंघाड़ (का अज़ाब) भेज दिया तो वह बाड़े वालों के सूखे हुए चूर चूर भूसे की तरह हो गए

32

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍۭ

और हमने कुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया है तो कोई है जो नसीहत हासिल करे

33

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍۭ بِالنُّذُرِ

लूत की क्रौम ने भी डराने वाले (पैग़म्बरों) को झुठलाया

34

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آءَالَ لُوطٍۭ ۖ نَجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍۭ

तो हमने उन पर कंकर भरी हवा चलाई मगर लूत के लड़के वाले को हमने उनको अपने फज़ल व करम से पिछले ही को बचा लिया

35

نِعْمَةًۭ ۖ مِّنْ عِنْدِنَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ

हम शुक्र करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं

36

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا۟ ۖ بِالنُّذُرِ

और लूत ने उनको हमारी पकड़ से भी डराया था मगर उन लोगों ने डराते ही में शक़ किया

37

وَلَقَدْ رَوَدُّهُ عَن ضَيْفِهِ ۖ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟ عَذَابِي وَنُذُرِ

और उनसे उनके मेहमान (फ़रिश्ते) के बारे में नाजायज़ मतलब की ख्वाहिश की तो हमने उनकी आँखें अन्धी कर दीं तो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चखो

38

وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌۭ مُّسْتَقَرٌّۭ

और सुबह सवेरे ही उन पर अज़ाब आ गया जो किसी तरह टल ही नहीं सकता था

39

فَذُوقُوا۟ عَذَابِي وَنُذُرِ

तो मेरे अज़ाब और डराने के (पड़े) मज़े चखो

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ؟

और हमने तो कुरान को नसीहत हासिल करने के वास्ते आसान कर दिया तो कोई है जो नसीहत हासिल करे

وَلَقَدْ جَاءَ عَالٍ فِرْعَوْنَ الْنُّذُرُ

और फिरऔन के पास भी डराने वाले (पैगम्बर) आए

كَذَّبُوا؟ بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ؟ مُقْتَدِرٍ

तो उन लोगों ने हमारी कुल निशानियों को झुठलाया तो हमने उनको इस तरह सख्त पकड़ा जिस तरह एक ज़बरदस्त साहिबे कुदरत पकड़ा करता है

أَكْفَارُكُمْ خَيْرٌ؟ مِنْ أَوْ لَيْئِكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ؟ فِي الزُّبُرِ

(ऐ अहले मक्का) क्या उन लोगों से भी तुम्हारे कुफ़ार बढ़ कर हैं या तुम्हारे वास्ते (पहली) किताबों में माफी (लिखी हुई) है

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ؟ مُنْتَصِرُونَ؟

क्या ये लोग कहते हैं कि हम बहुत क़वी जमाअत हैं

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ

अनक़रीब ही ये जमाअत शिकस्त खाएगी और ये लोग पीठ फेर कर भाग जाएँगे

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَى وَأَمَرُّ

बात ये है कि इनके वायदे का वक्त क़यामत है और क़यामत बड़ी सख्त और बड़ी तल्ल (चीज़) है

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ؟

बेशक गुनाहगार लोग गुमराही और दीवानगी में (मुब्तिला) हैं

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا ۚ مَسَّ سَقَرَ

उस रोज़ ये लोग अपने अपने मुँह के बल (जहन्नुम की) आग में घसीटे जाएँगे (और उनसे कहा जाएगा) अब जहन्नुम की आग का मज़ा चखो

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۚ

बेशक हमने हर चीज़ एक मुक़रर अन्दाज़ से पैदा की है

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ ۚ كَلِمَةٍ ۚ بِالْبَصَرِ

और हमारा हुक्म तो बस आँख के झपकने की तरह एक बात होती है

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ۚ

और हम तुम्हारे हम मशरबो को हलाक कर चुके हैं तो कोई है जो नसीहत हासिल करे

وَكُلُّ شَيْءٍ ۚ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ

और अगर चे ये लोग जो कुछ कर चुके हैं (इनके) आमाल नामों में (दर्ज) है

وَكُلُّ صَغِيرٍ ۚ وَكَبِيرٍ ۚ مُسْتَطَرٌّ

(यानि) हर छोटा और बड़ा काम लिख दिया गया है

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ۚ

बेशक परहेज़गार लोग (बेहिश्त के) बाग़ों और नहरों में

فِي مَقْعَدٍ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِكٍ ۚ مُّقْتَدِرٍ ۚ

(यानि) पसन्दीदा मक़ाम में हर तरह की कुदरत रखने वाले बादशाह की बारगाह में (मुकर्रिब) होंगे

